भारतीय कैलेंडर
एवं
राष्ट्रीय पंचांग

कृष्णा राय, मौ.वि.ए
खगोल विज्ञान केंद्र,
कोलकाता

क्यूँ भारतीय कैलेंडर बनाने की जरूरत पड़ी?

अलग अलग क्षेत्रीय कैलेंडर में विभिन्न विभिन्न प्रथाओं का पालन किया जाता है जैसे कि माह शुरू करने की तिथि अलग क्षेत्र में अलग प्रकार की होतीं है । आजादी के तुरंत बाद, भारत सरकार ने महसूस किया कि पूरे देश के लिए एक स्टैण्डर्ड कैलेंडर होना चाहिए, ताकि सभी क्षेत्रों में कैलेंडर प्रणाली की अलग- अलग प्रथाएं एक समान हो जाएं ।

माननीय भारत सरकार ने कैसे मान्यता दी|

उस दृष्टि से, भारत सरकार ने नवंबर 1952 में प्रोफेसर मेघनाद साहा की अध्यक्षता में एक कैलेंडर रिफर्म कमिटि का गठन किया, ताकि कमिटि एक उपयुक्त कैलेंडर की सिफारिश कर सके जिसको राष्ट्रीय कैलेंडर के रूप में इस्तेमाल किया जा सके ।

कमिटी ने क्या क्या सिफारिश की।

कमिटि ने एक सोलर कैलेंडर की सिफारिश की जिसको ग्रेगोरियन कैलेंडर तिथियों के साथ आधिकारिक उद्देश्यों के लिए उपयोग किया जाए |

कमिटि ने **इंडियन एस्ट्रोनॉमीकल एफिमेरिस** को तैयार करने की भी सिफारिश की, जिसमें सटीक एस्ट्रोनॉमीकल फर्मुला और वैज्ञानिक गणना द्वारा प्राप्त डेटा के साथ **राष्ट्रीय पँचांग** के रूप में भारत के **राष्ट्रीय कैलेंडर** को प्रकाशित किया जाए ।

माननीय भारत सरकार ने की कमिटि की मांगों को मान ली।

पूरे भारत में दो प्रकार के क्षेत्रीय कैलेंडर का उपयोग किया जाता है।

पूरे भारत में विभिन्न क्षेत्रों में दो प्रकार के क्षेत्रीय कैलेंडर का उपयोग किया जा रहा है, **एक है सोलर और दूसरा लूनी-सोलर** । **खगोल विज्ञान केंद्र द्वारा तैयार किया गया नेशनल कैलेंडर एक सोलर कैलेंडर है जिसमें शक युग (ऐरा) का उपयोग किया जाता है।**

इसी तरह ग्रेगोरियन कैलेंडर एक सोलर कैलेंडर है, जिसकी निश्चित वर्ष की लंबाई (365 दिन) है, जिसका उपयोग दुनिया भर में ग्रेगोरियन एरा के साथ एरा के रूप में उपयोग किया जाता है।

क्षेत्रीय कैलेंडर में भिन्यता एवं किस किस क्षेत्र में सोलर कैलेंडर को पालन किया जाता है।

भारत के विभिन्न क्षेत्रों में क्षेत्रीय कैलेंडर के रूप में जो पारम्परिक सोलर और लुनी- सोलर कैलेंडर उपयोग किया जाता है उसमें वर्ष की लंबाई वेरिअब्ले (Variable) होता है।

सोलर कैलेंडर का उपयोग निम्नलिखित राज्यों में क्षेत्रीय कैलेंडर के रूप में किया जाता है: **पश्चिम बंगाल, असम, त्रिपुरा, ओडिशा, तमिल नाडु, केरल, पंजाब और हरियाणा।**

क्षेत्रीय **सोलर कैलेंडर** में क्रांतिवृत्त पर सूर्य की पूर्ण 360° क्रांति को एक वर्ष माना जाता है। यहाँ 12 राशियाँ 18° बेल्ट के भीतर क्रांतिवृत्त के बीच में होती हैं, जिनमें प्रत्येक राशि की चाप लंबाई 30° है । संबंधित राशियों में क्रांतिवृत्त पर सूर्य की यात्राकाल को एक एक सोलर महीना माना जाता है।

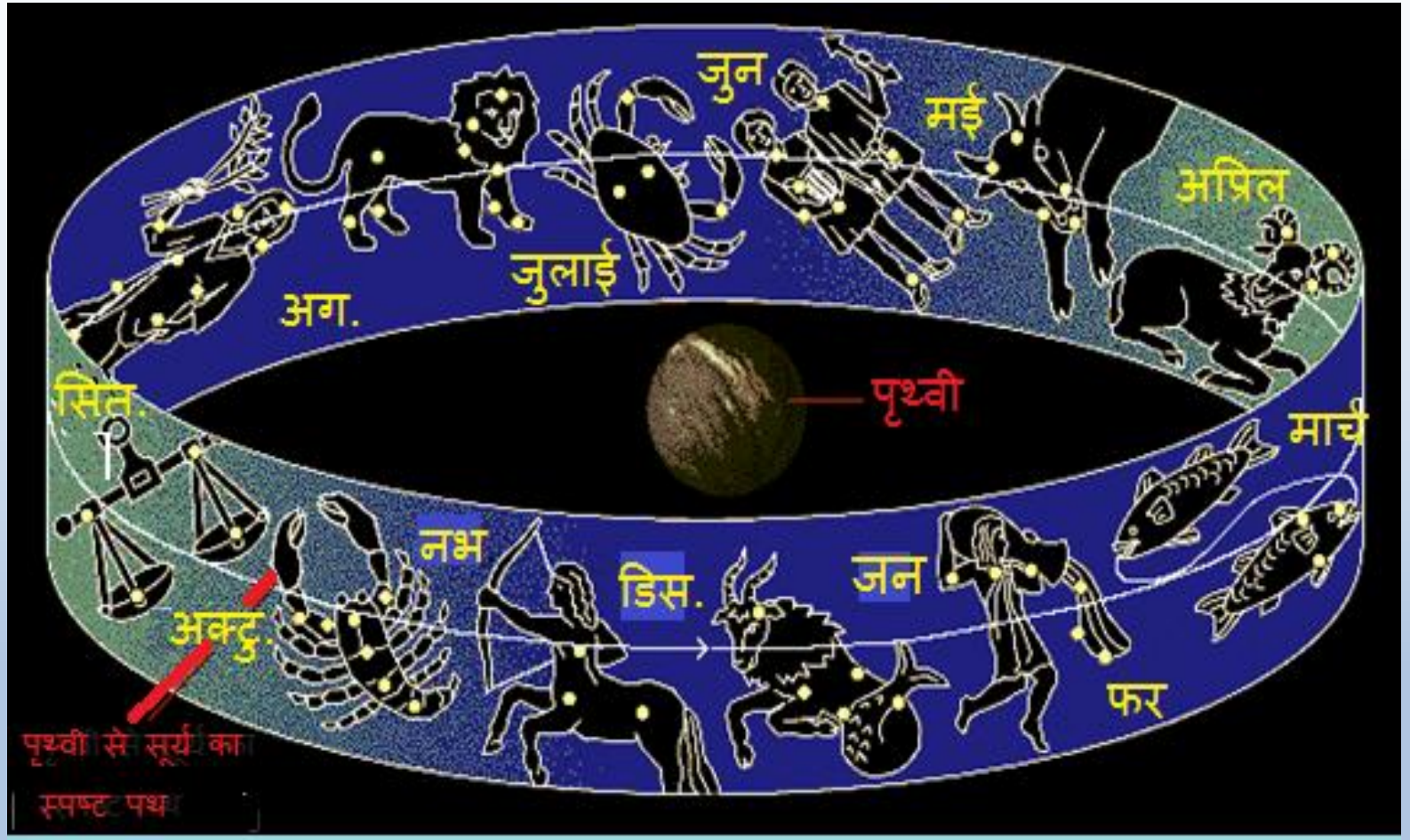

जोडीयाक बेल्ट

लूनी सोलर कैलंडर

लुनी सोलर कैलेंडर पृथ्वी के चारों ओर चंद्रमा की गति पर आधारित है। यहां महीने को **एक पूर्णिमा से अगली पूर्णिमा या एक अमावस्या से अगली अमावस्या तक का समय माना जाता है। एक पूर्णिमा से अगली पूर्णिमा या एक अमावस्या से अगले अमावस्या तक की औसत(average) समय अवधि 29.5** दिन है।**12 महीने** जब जोड़ा जाता है तो एक पूर्ण लुनर वर्ष बनता है जो लगभग 354 दिनों का होता है। इस प्रकार एक लुनर वर्ष की लंबाई सोलर वर्ष की लंबाई से लगभग 11 दिन कम होती है। **इस प्रकार 3 साल में 33 दिन कम हो जाएंगे, एक लुनर वर्ष की लंबाई तीन साल में सोलर वर्ष की लंबाई से लगभग एक महीने कम हो जाएगी। इसलिए एक लुनर वर्ष की लंबाई सोलार वर्ष की लंबाई के साथ सिंक्रनाइज़ नहीं होता एवं मौसम के साथ भी सिंक्रनाइज़ नहीं होता**। यह सुनिश्चित करने के लिए लुनर कैलेंडर में एक **निश्चित अंतराल पर अतिरिक्त महीना जोड़ी जाती है (19 साल में 7 अतिरिक्त महीने) ताकि लुनर वर्ष की लंबाई सोलर वर्ष की लंबाई एव मौसम के साथ सिंक्रनाइज़ हो जाए। ऐसे कैलेंडर को लूनी-सोलर कैलेंडर कहा जाता है।**

अतिरिक्त महीने - मल माह

अतिरिक्त महीने को मल माह या अधिक माह कहां जाता हैं | गणना में देखा गया कि माघ माह आरंभ होने की तिथि से यह पता चल जाता है कि कौन सि महीना वर्ष में अतिरिक्त माह के रुप में जोड़ी जाएगि ।

माघ माह आरंभ होने की तिथि	संभावित मल माह
जनवरी -14	फाल्गुन या चैत्र
जनवरी -15-16	वैशाख
जनवरी -16-17- 18- 19	ज्येष्ठ
जनवरी -18-19-20	आषाढ़
जनवरी -19-20-21-22	श्रावण
जनवरी -22-23-24	भाद्र
जनवरी -25 से फरवरी 12	मल माह नहीं होगा ।

अमांत लुनी-सोलर कैलेंडर एवं पूर्णिमांत लूनी-सोलार-कैलेंडर

लूनी-सोलर कैलेंडर में अमावस्या के समाप्त होने वाले महीनों को अमांत लुनी-सोलर कैलेंडर कहा जाता है और पूर्णिमा के समाप्त होने वाले महीनों को पूर्णिमांत लूनी-सोलार कैलेंडर कहा जाता है।

निम्नलिखित राज्यों में क्षेत्रीय कैलेंडर के रूप में **अमांत** लुनी-सोलर कैलेंडर का पालन किया जाता है: **महाराष्ट्र, गुजरात , अॅन्ध्रप्रदेश, एवं कर्नाटक** ।

निम्नलिखित राज्यों में क्षेत्रीय कैलेंडर के रूप में **पूर्णिमांत** लुनी-सोलर कैलेंडर का पालन किया जाता है:

उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, उत्तर पश्चिम भारत, झारखंड, छत्तीसगढ़ और उतराखंड।

राष्ट्रीय पंचांग

राष्ट्रीय पंचांग में राष्ट्रीय कैलेंडर की तिथियां शामिल रहती हैं साथ में अन्यान्य पंचांग पैरामीटर होते हैं जों सटीक और आधुनिक वैज्ञानिक सूत्रों पर आधारित होता है । **यह पंचांग पूरे देश में मानक रूप सें उपयोग किया जाता है और इसे सटीक कैलेंड्रिक डेटा के रूप में इस्तेमाल किया जाता है |**

राष्ट्रीय पंचांग में शक युग वर्ष का प्रत्येक माह की दिन की लंबाई निश्चित है, जो इस प्रकार हैं:

चैत्र -30 दिन (लीप वर्ष के मामले में 31 दिन)

वैशाख	**-**	**31 दिन**
ज्येष्ठ	**-**	**31 दिन**
आषाढ़	**-**	**31 दिन**
श्रावण	**-**	**31 दिन**
भाद्र	**-**	**31 दिन**
आश्विन	**-**	**30 दिन**
कार्तिक	**-**	**30 दिन**
अग्रहाय	**-**	**30 दिन**
पौष	**-**	**30 दिन**
माघ	**-**	**30 दिन**
फाल्गुन	**-**	**30 दिन**

राष्ट्रीय पंचांग और इंडियन एस्ट्रोनॉमीकल एफिमेरिस का प्रकाशन वर्ष 1957 से शुरू हुआ।

धन्यवाद